Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D Jain College, Ara

M.A. semester — III
Phil. CC—10
Contemporary Western Philosophy

GRB BOOKS

1. Notes /

Bradley: ~~Appearance and Reality~~ Degree of Reality

आधुनिक युग के 'जॉनी' कहलाने वाले ब्रिटिश फ्रांसिस हर्बर्ट ब्रैडले ब्रिटानी आदर्शवादियों में सबसे अधिक ख्याति प्राप्त एवं प्रभावशाली दार्शनिक हैं। ब्रैडले भी स्वीकार करते हैं कि संसार में हम सत्यता के अंश (degrees of truth) पाते हैं जिसके आधार पर हम अन्तिम सत्यता की ओर बढ़ते हैं।

ब्रैडले यथार्थ का एक प्रमुख लक्षण पूर्णता मानते हैं। यथार्थ में कोई अपूर्णता नहीं है क्योंकि वह एक है और सम्पूर्ण नानात्व समन्वित होकर उसी में समाहित है। ऐसे यथार्थ में पूर्णता खोजना उचित संगत नहीं है, फिर भी हमारे अनुभव में पूर्णता न्यूनाधिक अंशों में प्रतीत हो रही है। इसलिए यह प्रश्न उठता है कि वे विभिन्न अंश कहाँ प्रतीत होते हैं — प्रतीति में या यथार्थ में? नव-हेगेलवादी दार्शनिकों में इस विषय पर अनेक मत हैं। हेगेल ने स्वयं तर्क प्रकृति आत्मा का न्यूनाधिक पूर्णता के अनुसार एक क्रम बना लिया था। सभी हेगलवादियों के अनुसार सान्त वस्तुएँ निरपेक्ष सत्ता की ही विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। वे सभी प्रकार की अपूर्ण हैं।

1. निरपेक्ष सत्ता में अंश नहीं (No degrees in absolute reality)

निरपेक्ष सत्ता में आंशिकता का प्रश्न नहीं है, क्योंकि वह पूर्ण और पूर्णतः है। उसमें न्यूनाधिकता नहीं होती है। ऐसे विषय एक जगत से और वही समन्वित होते हैं

सुगम पास-बुक

GRB BOOKS

Notes

उसका अर्थ भी हो सकता है। वेडले की निरपेक्ष सत्ता पूर्ण अनन्त और आध्यात्मिक है, न उसमें अपूर्णता है, और न वह आंशिक है। अतः उसमें आंशिकता भी नहीं है। आंशिक सम्बन्धात्मक है। उसका प्रयोग वहीं हो सकता है, जहाँ एक से अधिक वस्तुयें हों या वस्तुओं के बीच तुलना का अवसर हो। यह सापेक्ष सम्बन्ध कारण वहीं विविक्षित है, जहाँ दोनों के बीच न्यूनाधिक अंश में कोई विवेक की सम्भावना है। अतः निरपेक्ष अन्य वस्तु में आंशिकता नहीं है। निरपेक्ष सत्ता है —

2. प्रतीत में आंशिकता (Degrees in appearance) - जगत की समस्त वस्तुयें अपूर्ण है क्योंकि वे सभी ससीम है। सीमायें तीन प्रकार की है — देशगत, कालगत और वस्तुगत। प्रतीत को ये तीनों सीमायें आबद्ध किये है। स्वयं विभिन्न वस्तुओं तथा एक दूसरे से परिच्छिन्न है। सभी को अनुभव से ज्ञात है कि एक जगत की सभी वस्तुयें समान रूप से ससीम या परिच्छिन्न नहीं है। उनमें अनेक भेद देखने में आते हैं। कुछ वस्तुओं का आकार छोटा है, कुछ का बड़ा है। कुछ थोड़े काल तक ही रहती है, कुछ अधिक काल तक। कुछ वस्तुएं शीघ्र परिवर्तित होती है और कुछ देर में। और रहती है क्रम। इस प्रकार वस्तुओं में आकार विस्तार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

... सामंजस्य आदि के अनेक
और आंशिक कोटियाँ हैं। किन्तु ब्रैडले के
अनुसार यह प्रतीति मात्र जैसा कि पहले कहा
जा चुका है, आभासों के अन्तर्गत ही
न्यूनाधिकता के ढंग से समाविष्ट हैं।
कोई अधिक स्पष्ट कहें तो प्रतीति सर्वथा
असत् और अग्राह्य नहीं है बल्कि उसमें
आंशिक रूप में यथार्थता है। चूँकि पूर्ण,
सामंजस्य युक्त ही पूर्ण, यथार्थ और
सत्य है। अतः न्यूनेतर सामंजस्य युक्त
सत्य को आंशिक सत्य कहा जा सकता
है।

इसके अतिरिक्त निरपेक्ष
सत्ता सर्वग्राही है। इसके बाहर कुछ
भी नहीं है। पूर्ण में सबकुछ समाविष्ट
होना चाहिए। इसलिए उसमें आंशिकता
तो मात्रा में नहीं है। किन्तु आभास में
सबकुछ समन्वित नहीं है इसके बाहर
भी कुछ रह जाता है। अतः इसको पूर्णतः
आंशिक है। न्यूनाधिक रूप में सत्य होने
और न्यूनाधिक रूप में वास्तविक होने का
अर्थ है कि किसी छोटे या बड़े अन्तराल
के द्वारा सर्व-समाविष्ट अथवा
स्वयं-सिद्ध की अवस्था से पृथक
होना है। इन प्रत्येक आभासों में से
एक जो अधिक विस्तृत अथवा अधिक
समन्वय शील है, वह अधिक वास्तविक है। ब्रैडले कहते हैं कि
उसकी अपूर्णताओं
को दूर करने के लिए हमें कुछ
थोड़ा सा परिवर्तन करना
पड़ेगा जो सत्य और जो
तथ्य परमसत् में परिणत होने

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

के लिए पूर्णता तथा
व्यापकता रखता है वह
व्यापकता और व्यवस्थित और संगति का
सत्य और यथार्थ की सत्य है
उसी तात्पर्य है। आंशिकता।

ब्रैडले के अनुसार सत्यता और यथार्थता की भी मात्राएँ
के अनुसार एक श्रेणी के क्रम में रखा जा सकता है। परन्तु ब्रैडले के अनुसार आंशिक यथार्थता की आंशिकता के क्रम पर तत्व-शास्त्र को प्रतीति में अन्तर्भाव निर्देशन करना चाहिए। किन्तु क्रम साधारण नहीं है। फिर भी ब्रैडले ने इस प्रकार के क्रम-निर्देशन हेतु कुछ सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं।

(अ) जो वस्तु अनुभव का क्षेत्र अधिक घेरती है वह अभिव्यक्ति के दूसरों की अपेक्षा अधिक सत्य और यथार्थ कहा जा सकता है।

(ब) जो वस्तु दूसरी वस्तु से अधिक स्थायी है या अधिक कालतक उसमें कम परिवर्तन होता है वह अधिक यथार्थ और सत्य है।

(स) दो वस्तुओं में वह अधिक यथार्थ है जिसमें सामंजस्य अधिक है। मनुष्य का व्यक्तित्व पशुओं से अधिक सामंजस्ययुक्त है अतः वह अधिक यथार्थ है।

यद्यपि प्रत्ययवादी दार्शनिकों में ब्रैडले का स्थान प्रायः सर्वोच्च माना जाता है और सभी

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

विद्वानों ने उनकी प्रतिभा की प्रशंसा की है किन्तु उनके दर्शन को सर्वांगपूर्ण और आदिकल्प नहीं कहा जा सकता है। दर्शन के क्षेत्र में कोई भी विद्वान अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुंच सकता है। ब्रैडले के दर्शन में भी त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है।

ब्रैडले के अनुसार

तत्वज्ञान का उद्देश्य वह सामान्य दृष्टि प्राप्त करना है जो बुद्धि को सन्तुष्ट कर सके। जो कुछ हम कार्य में सफल हो वही सत्य और यथार्थ है। दूसरी ओर यह भी मानते हैं कि यथार्थ वही एकात्मक अनुभव है जो सब प्रयत्नों और सम्बन्धों से ऊपर है। वह बनावट में सरल उसका प्रति विषय समन्वित जिसके अंतर्गत सर्वस्व समाविष्ट और जिसकी प्रकृति में चेतनानुभूति होनी चाहिए। किन्तु ये दो बातें एक साथ नहीं दिखाई देती, क्योंकि बुद्धि का लक्षण ही सम्बन्धात्मक है।

ब्रैडले ने यथार्थ का मुख्य लक्षण अव्याघात बताया है अर्थात यथार्थ में कोई आत्मविरोधी तत्व नहीं होना चाहिए तभी यथार्थ हो सकता है अन्यथा नहीं। ब्रैडले इस तथ्य से सम्बन्ध नहीं रखते हैं। यथार्थ एक है, वह सामञ्जस्य-पूर्ण है, उसमें दुःख, सुख अधिक है — ऐसे कोई भी निर्णय यथार्थ को अव्याघात लक्षण सम्बन्ध

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

नहीं सकते हैं।
ब्रेडले ने व्याघात
विवेचना करने का तो प्रयत्न किया की
किन्तु जिस बात की विवेचना किसी नहीं
हैं वे ऐसे स्थान पर पहुँच गये और
हैं जहाँ असम्प्रापत्ति (Dilemma)
उपस्थित हो जाता है, वे केवल उस
व्याघात को कहते हैं,
यथार्थता को वंचित कर देते हैं।
उनकी दृष्टि में वह प्रतीत होती है।
जाती है। उन्होंने कभी नहीं यह
था कि प्रतीत होने वाला सोचा
स्वयं मिथ्या हो सकता है। व्याघात
की प्रतीतिमात्र से मुक्त मिथ्या व्याघात
कही जा सकती है। किसी नहीं
विश्लेषण करने में व्याघात वस्तु का
भी हो सकता है और विचार वस्तु में
में। यदि ब्रेडले विचारों में ही
व्याघात मानते हैं तो किसी
का विश्लेषण और विचार वस्तु
अधिकार से बाहर है और
ब्रेडले शायद यह नहीं मानते किन्तु
उनके अनुसार वे तर्कों में ही हैं।
व्याघात है, इसलिए वे प्रतीतिमात्र
है। किन्तु यह भी सम्भव है
वाली बात नहीं है। आगम में
हो सकता कदाचित कभी अपनी
है। इसमें कभी नहीं छोड़ती
होती है। व्याघात नहीं

को तार्किक अ-व्याघात ब्रेडले ने निरपेक्ष
के लक्षण से विभूषित
कर निर्जीव बना डाला

सुगम पास-बुक

Joines /

सं. [illegible] निरपेक्ष इसी प्रकार
सत्ताहीन विचारों का आत्मनिरीक्षण करता
है। जैसा कि [illegible] ने
हीगेल के विरुद्ध शिकायत की थी।
इस प्रकार [illegible] के
सत्यता के अंश का [illegible] की मात्रा
सम्बन्धी नहीं विचार है।

GRB BOOKS

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS